हक हादी रूहन सों, इत खेलें माहें मोहोलन।
ए रहे हमेसा अर्स में, हौज जोए बागन।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियां इस महल में खेलती हैं। वह हमेशा परमधाम में रहती हैं जहां सुन्दर हौज कौसर, जमुनाजी और बगीचे हैं।

मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात।
तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात।। ४६ ।।

परमधाम में मेवा, फल, फूल, पेड़, पत्ते जो चाहिए वह तुरन्त ही ले लीजिए, परन्तु बागों की तरफ देखें तो वहां भी जैसे के तैसे लगे दिखाई देते हैं, अर्थात् वहां कोई चीज नष्ट नहीं होती।

एक बाल न खिरे पसुअन का, न गिरे पंखी का पर।
कोई मोहोल न कबूं पुराना, दिन दिन खूबतर।। ४७ ।।

जहां पशुओं का एक बाल नहीं गिरता, पक्षियों का एक पर नहीं गिरता, जहां के महल कभी पुराने नहीं होते, दिनों दिन और अच्छे ही दिखाई पड़ते हैं।

इत नया न पुराना, न कम ज्यादा होए।
इत वाहेदत में दूसरा, कबहूं न कहिए कोए।। ४८ ।।

यहां कोई चीज नई नहीं होती, पुरानी नहीं होती, न कम होती है न ज्यादा होती है। यहां सब एक दिली है, अर्थात् एक नूर से है, इसलिए दूसरा किसी को कह नहीं सकते।

महामत सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार।
हक बका अर्स सबका, तिन इतहीं पाया दीदार।। ४९ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान जिन्होंने लिया वह यहां ही सावचेत हो गए और श्री राजजी महाराज का अखण्ड परमधाम का दर्शन यहीं मिल गया।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३८७ ।।

इलम का बेवरा नाजी फिरका

फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद।
मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अर्स सब्द।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, कुरान में और मुहम्मद साहब की हदीसों में जो कहा है उसका मैं बयान करती हूं। जो मोमिन होंगे, परमधाम के इन असली शब्दों को पहचानेंगे।

एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन।
तिनको सारों ढूंढिया, सो एक न पाया किन।। २ ।।

जिस पारब्रह्म को वेद और कतेबों ने एक कहा है वह सबसे अलग रहा। उस एक को सबों ने ढूंढ़िया पर उस एक पारब्रह्म को कोई पा नहीं सका।

एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर।। ३ ।।

सब धर्मग्रन्थ कहते हैं कि परमधाम एक है, किन्तु वह कहां है, किसी ने निश्चित ठिकाना नहीं बताया। सब कहते हैं कि हम ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए, पर हमें नहीं मिला।

Nijanand App

सब किताबों में लिख्या, एक थें भए अनेक।
सो सुकन कोई न केहेवहीं, जो इस तरफ है एक।।४।।

सब धर्मग्रन्थों में लिखा है कि परमात्मा सबका एक है और वह एक परमात्मा ही सबको पैदा करने वाला है। यह सब बातें कोई नहीं बताता।

सो हक किनों न पाइया, जो कह्या एक हजरत।
ढूंढ़ ढूंढ़ फिरके फिरे, पर किनहूं न पाया कित।।५।।

हजरत मुहम्मद ने अल्लाह को एक कहा है। उस सच्चे एक को किसी ने नहीं पाया। उनके ही धर्म के फिरके ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए, पर उस एक को नहीं पाया कि वह कहां है?

ना कछू पाया एक को, ना उमत अर्स ठौर।
ना पाया हौज जोए को, जाए लगे बातों और।।६।।

इस एक के बारे में कुछ ज्ञान नहीं मिला और न ब्रह्मसृष्टि और परमधाम का पता चला। रंग महल, हौज कौसर, तालाब, जमुनाजी, आदि किसी की खबर नहीं लगी, इसलिए सभी लोग इधर-उधर कर्मकाण्ड की बातें चलाने लगे।

नब्बे बरस हजार पर, पढ़ते गुजरे दिन।
लिखी कयामत बीच कुरान के, सो तो न पाई किन।।७।।

रसूल साहब के एक हजार नब्बे बरस बीतने पर, अर्थात् सम्वत् १७३५ में कयामत के निशान जाहिर होंगे, ऐसा कुरान में लिखा है, परन्तु किसी ने इस इशारे को नहीं समझा।

आसमान जिमी की दुनियां, कथे इलम करे कसब।
किन एक न बका पाइया, दौड़ दौड़ थके सब।।८।।

आसमान के देवी-देवता और संसार के लोग ज्ञान के वास्ते बड़ी कठिन साधनाएं करते हैं, किन्तु सभी दौड़-दौड़कर थक गए। किसी को अखण्ड घर का पता नहीं चला।

यों गोते खाए बीच फना के, ला सुन्य ना उलंघी किन।
ढूंढ़ ढूंढ़ सबे थके, कोई पोहोंच्या न बका वतन।।९।।

इस तरह से सारे जगत के लोग इस मिट जाने वाले संसार में गोते लगा रहे हैं। निराकार के पार कोई नहीं जा सका। बहुत ढूंढ़ने पर भी अखण्ड घर (परमधाम) कोई नहीं पहुंच सके।

लदुन्नी से पाइए, जो है इलम खुदाए।
खोज खोज सबे हारे, आज लों इमदाए।।१०।।

तारतम वाणी (जो पारब्रह्म का ज्ञान है) से ही अखण्ड घर की जानकारी मिली है। इसके बिना आज तक सभी लोग सभी धर्मग्रन्थों को खोज-खोजकर थक गए हैं और उसे कोई नहीं पा सका।

लिख्या है कतेब में, सोई करूं मजकूर।
एक फिरका पावेगा, जिन को तौहीद जहूर।।११।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान में जो लिखा है उन सबके रहस्यों को मैं जाहिर कर रही हूं (श्री प्राणनाथजी जिक्र कर रहे हैं)। मोमिन जो नाजी फिरका है, उसे ही पारब्रह्म का ज्ञान होगा।

Nijanand App

लिख्या है फुरमान में, खुदा एक महंमद बरहक।
तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक।। १२ ।।

कुरान में लिखा है कि सारे जगत का मालिक एक खुदा है और मुहम्मद साहब ने जो कहा है वह सत्य है। इस बात में जो संशय लाए उसे काफिर समझना।

एक खुदा हक महंमद, अर्स बका हौज जोए।
उतरी अरवाहें अर्स की, चीन्हो गिरो नाजी सोए।। १३ ।।

खुदा एक है, मुहम्मद सत्य है, परमधाम, हौज कौसर तालाब और जमुनाजी अखण्ड हैं, परमधाम से रूहें खेल में आई हैं और यही नाजी फिरका है, इसे पहचानो।

सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए।
सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के।। १४ ।।

सब दुनियां के धर्मग्रन्थों का सार कुरान में लिखा है। कुरान में यह भी लिखा है कि मूसा के बेटे असराईल (मूसा देवचन्द्रजी असराईल श्री प्राणनाथजी) के इलम के बराबर दुनियां का कोई इलम नहीं कर सकता।

कहे फुरमान इलम मूसे का, और बड़ा इलम खिजर।
इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर।। १५ ।।

कुरान में ऐसा भी लिखा है कि मूसा का इलम और खिजर का इलम बड़ा है, परन्तु दोनों के इलम जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) के एक बूंद के बराबर नहीं हैं।

फिरके इकहत्तर मूसा के, हुए ईसा के बहत्तर।
एक को हिदायत हक की, यों कह्या पैगंमर।। १६ ।।

मूसा के इकहत्तर फिरके हुए। ईसा के बहत्तर हुए, परन्तु पैगम्बर ने एक पर ही हक की हिदायत होगी, बताया है, अर्थात् नाजी फिरका एक ही है।

महंमद के तेहत्तर हुए, तिनको हुआ हुकम।
जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम।। १७ ।।

मुहम्मद के तेहत्तर फिरके हुए और उनको मुहम्मद साहब ने हुकम दिया। जिस एक नाजी फिरके को हक की हिदायत होगी, तुम सब उसी में शामिल हो जाना।

जिन दीन लिया खुदाए का, सो नाजी गिरो आखिर।
और होसी दोजखी, जो जुदे रहे बहत्तर।। १८ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की वाणी को समझकर अमल किया, वही आखिर में मोमिन की जमात है। बाकी बहत्तर फिरके दोजखी होंगे जो अलग रहेंगे।

दुनियां चौदे तबक में, सोई नाजी गिरो है एक।
आखिर जाहेर होएसी, पर पेहेले लेसी सोई नेक।। १९ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में ब्रह्मसृष्टि की जमात एक ही है जो आखिर के वक्त में जाहिर हो जाएंगे। जो उन्हें पहले पहचान लेगा उसी की महिमा होगी।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, ल्यो हकीकत कुरान।
ढूंढ़ो फिरके नाजी को, जो है साहेब ईमान।। २० ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! कुरान की इस हकीकत को समझो और पारब्रह्म के ऊपर पक्का यकीन लाने वाले नाजी फिरके को ढूंढो।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४०७ ॥

हक की सूरत

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत।
हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जाहिरी अर्थ लेने वाले मुसलमानों को देखो जिन्होंने सच्ची हकीकत को समझा नहीं। मुहम्मद साहब ने इनको जो न्यामत लाकर दी कि खुदा की सूरत है, मैं मिलकर आया हूं, उसे वह मानते नहीं हैं।

आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर।
तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर।। २ ।।

आसमान के देवी-देवता और दुनियां के लोगों ने पारब्रह्म को खोजने के बड़े प्रयत्न किए, परन्तु वह पारब्रह्म के स्वरूप और अखण्ड परमधाम के ठिकाने को नहीं जान सके।

खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक।
खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगूं न हुए बेसक।। ३ ।।

दुनियां वालों ने बहुत खोज की, परन्तु पारब्रह्म के स्वरूप को नहीं पाया। खोजते-खोजते निराकार में ही समा गए और संशय छोड़कर आगे नहीं जा सके।

दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार।
तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार।। ४ ।।

सभी दौड़कर निराकार तक थक गए। निराकार के पार कोई नहीं जा सका। निराकार और निरंजन को ही पारब्रह्म समझ लिया।

पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत।
बोहोत करी रद-बदलें, वास्ते सब उमत।। ५ ।।

इन सबके बाद रसूल साहब आए और उन्होंने कहा कि मैं पारब्रह्म से मिलकर आया हूं। मैंने पारब्रह्म से, अपनी उम्मत के वास्ते बहुत वार्तालाप किया है।

अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर।
और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर।। ६ ।।

अखण्ड परमधाम, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी, पानी, बगीचे, जमीन, जानवर और परमधाम की रूहों को मैंने देखा, अतः पारब्रह्म का पत्रवाहक (रसूल) बनकर आया हूं।

बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हक सों बड़ी मजकूर।
ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर।। ७ ।।

मैंने अखण्ड परमधाम में बहुत सी न्यामतें देखी हैं और पारब्रह्म से बड़ी बातें की हैं। उसी के अनुसार इस सपने की झूठी दुनियां में अखण्ड परमधाम का (श्री राजजी महाराज का) प्रकाश मैंने फैलाया।

Nijanand App